वर्ष : 10 अंक : 4 अक्टूबर–दिसम्बर 2015

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. मंगला राय, कुलपति
मुख्य सम्पादकः डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा
सम्पादकः डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो एवं ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण)

कुलपति संदेश

'पन्त प्रसार सन्देश' पत्रिका अक्टूबर–दिसम्बर, 2015 (वर्ष 10:4) अंक आपके हाथों में है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध निष्कर्षों को जन–जन तक पहुंचाने में प्रसार शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रसार गतिविधियों को संकलित कर प्रबुद्ध वर्ग में प्रस्तुत करने से वैज्ञानिकों एवं प्रसार अधिकारियों/कर्मियों को प्रेरणा मिलती है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कृषक, कृषक महिलाएं एवं युवक तकनीकी अर्जित कर आजीविका एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि करने में सफल होंगे। प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वाधान में आयोजित 'अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी', नवीनतम कृषि तकनीकों को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है, जिसमें किसानों की भारी भागीदारी हमारा उत्साहवर्धन करती है। विगत किसान मेले में कृषि विकास हेतु कार्यरत राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय फर्मों तथा हजारों किसानों ने हमें बहुत प्रेरित किया है। इस पत्रिका द्वारा पन्तनगर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा की गतिविधियों को आप तक पहुंचा कर हमें प्रसन्नता हो रही है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यों को और अधिक गतिशील बनाने में सहभागी होगी।

शुभकामनाएँ।

(मंगला राय)
कुलपति

98वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वाधान में 'कृषि कुंभ' के नाम से विख्यात 98वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का भव्य आयोजन अक्टूबर 01–04, 2015 को विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। मेले का उद्घाटन 01 अक्टूबर, 2015 को प्रातः 11 बजे मुख्य अतिथि, माननीय राज्यपाल उत्तराखण्ड, डा. के.के. पॉल द्वारा कुलपति डा. मंगला राय, प्रबन्ध परिषद के माननीय सदस्यगण श्री राजेश शुक्ला (विधायक) एवं श्री राजेन्द्रपाल सिंह तथा अन्य गणमान्य जनप्रतिनिधियों, अधिष्ठातागण, निदेशकगण, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, छात्रों एवं कृषकों की उपस्थिति में गाँधी मैदान में किया गया। मेले का उद्घाटन करने के बाद अतिथियों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा मेला प्रांगण में लगे स्टॉलों का भ्रमण एवं अवलोकन किया गया। ततपश्चात् गाँधी सभागार में आयोजित उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि, डा. के.के. पॉल ने अपने सम्बोधन में कहा कि देश की सुरक्षा में खाद्य सुरक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने स्वतंत्रता के बाद से देश के खाद्यान्न उत्पादन में हुई अत्यधिक वृद्धि में पन्तनगर विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान बताया। देश की आर्थिक स्वतंत्रता एवं स्मृद्धि में किसानों का योगदान बताते हुए उन्होंने किसानों को देश की खुशहाली का प्रतीक बताया। राज्यपाल ने पानी की कमी को देखते हुए कम पानी से अधिक उत्पादन देने वाली प्रजातियों के विकास की आवश्यकता बतायी तथा उर्वरकों के कम प्रयोग से अधिक उत्पादन प्राप्त करने की तकनीकों के लिए शोध करने को वैज्ञानिकों से कहा। उत्तराखण्ड के ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों में पैदा हो सकने वाली फसलों व पौधों की जानकारी वहाँ के किसानों को दिये जाने की भी उन्होंने आवश्यकता बतायी। पन्तनगर के प्रसिद्ध गुणवत्तायुक्त बीज ले जाने का उन्होंने किसानों को सुझाव दिया। साथ ही पन्तनगर के वैज्ञानिकों से उत्तराखण्ड को कृषि सम्पन्न एवं बीज राज्य बनाये जाने की अपेक्षा की।

किसान मेले का उद्घाटन करते हुए मा. राज्यपाल डा. के.के. पाल

विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मंगला राय ने अपने सम्बोधन में किसानों से कहा कि विश्वविद्यालय ने अपनी तकनीकों को इस मेले के माध्यम से आपके समक्ष लाया है तथा मेले में आयोजित होने वाली गोष्ठियों से आपकी समस्याओं को जानकर व उन पर शोध कर उनका समाधान खोजा जायेगा। उन्होंने साठ के दशक में लरमारोजा एवं सुनारो 64 जैसी धान व गेहूँ की प्रजातियों से हरित क्रान्ति लाने व देश की बीज की आधी आवश्यकता की पूर्ति करने जैसे पन्तनगर विश्वविद्यालय के महत्वपूर्ण योगदान की याद दिलाते हुए कहा कि आज भी हम नयी–नयी तकनीकों के विकास के लिए कृत–संकल्प हैं। साल भर अमरूद की फसल प्राप्त करने की तकनीक के अतिरिक्त अब सदाबहार कटहल व साल भर आम प्राप्त करने हेतु नयी प्रजातियों का प्रवर्धन कर किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा। उन्होंने किसानों से गोष्ठी में अपनी समस्याओं के साथ–साथ नयी तकनीकों के बारे में वैज्ञानिकों से अधिक से अधिक सवाल कर जानकारी प्राप्त करने के लिए कहा ताकि बदलते पर्यावरण की परिस्थितियों में कम से

कम निवेशों के उपयोग से अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर उन्हें अच्छा लाभ मिल सके। समारोह के प्रारम्भ में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा सभी सम्मानित अतिथियों का स्वागत एवं समारोह के अन्त में निदेशक, अनुसंधान केन्द्र, डा. जे.पी. सिंह ने सभी सम्मानित अतिथियों का धन्यवाद किया।

मेले में विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के फर्मों ने स्टॉल लगाकर कृषि से सम्बन्धित उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया। मेले में अनुसंधान केन्द्रों पर परीक्षणों/ प्रदर्शनों का अवलोकन, रबी की फसलों के नवीनतम प्रजातियों के बीज व मिनीकिट की बिक्री, शाक–भाजी एवं फलों के उन्नत बीजों व पौधों की बिक्री, किसानोपयोगी उन्नत तकनीकों की प्रदर्शनी, आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी, विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री का आयोजन किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा प्रत्येक दिवस अपरान्ह् विशेष व्याख्यानमाला तथा कृषकों की समस्याओं का निराकरण हेतु कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कृषकों के मनोरंजन हेतु प्रत्येक दिवस सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। मेले के दौरान किसानों की विशेष रूचि विश्वविद्यालय की शोध इकाईयों द्वारा उत्पादित गुणवत्तायुक्त बीजों के क्रय करने में रही। इसके अलावा विभिन्न राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं बीमा कम्पनियों के स्टॉलों द्वारा कृषकों हेतु ऋण एवं अन्य उपयोगी योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई।

स्टॉल का निरीक्षण करते हुए मा. राज्यपाल

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का समापन मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड सरकार, श्री हरीश रावत द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने पन्तनगर विश्वविद्यालय से प्रदेश में दुग्ध उत्पादन व पौष्टिक चारा उत्पादन के साथ–साथ चार मैदानी जिलों के किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड उपलब्ध कराने में पन्तनगर विश्वविद्यालय की मदद चाही। अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि वे वर्ष 2017 तक चारों मैदानी जिलों के किसानों को यह कार्ड पन्तनगर की सहायता से देना चाहते हैं। साथ ही पर्वतीय क्षेत्रों में दुग्ध उत्पादन में बढ़ोत्तरी के लिए स्थानीय परिस्थितियों के लिए अनुकूल संकर गाय तथा पौष्टिक चारे की उपलब्धता बढ़ाने हेतु भी पन्तनगर विश्वविद्यालय की अगुवाई की अपेक्षा की। श्री रावत ने आज की कृषि की चुनौतियों यथा बढ़ती जनसंख्या, घटती कृषि भूमि एवं कृषि के लिए कम होती पानी की उपलब्धता को देखते हुए नीति निर्माताओं को कृषि अनुसंधान की ओर विशेष ध्यान देने के लिए कहा। मुख्यमंत्री ने संसाधनों की कमी से पन्तनगर की गौरव को कम न होने देने का आश्वासन दिया। साथ ही विश्वविद्यालय को स्थानीय किसानों की आवश्यकता को देखते हुए यहां की कृषि में आमूलचूक परिवर्तन करने की पन्तनगर से अपेक्षा की। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मंगला राय ने अपने सम्बोधन में कहा कि यह विश्वविद्यालय कुमाऊँ की पहाडियों को हरा–भरा देखना चाहता है। इस मेले के बाद दिसम्बर में विश्वविद्यालय के पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों में इसी प्रकार के मेले के माध्यम से जानकारी वहां के किसानों को प्रदान की जायेगी।

समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए मा. मुख्यमंत्री श्री हरीश रावत

समापन समारोह में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा मेले का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया गया कि किसान मेले में 225 बड़ी एवं 266 छोटी फर्मों सहित कुल 491 फर्मों द्वारा स्टॉल लगाकर विविध उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। किसान मेले में 10,235 पंजीकृत कृषकों सहित लगभग दो लाख से अधिक आगन्तुकों ने प्रतिभाग किया। इस चार दिवसीय मेले में विश्वविद्यालय के विभिन्न शोध केन्द्रों के स्टालों द्वारा लगभग रू. 69 लाख से अधिक मूल्य के बीज/पौधों की बिक्री की गई तथा निजी फर्मों के स्टालों द्वारा लगभग रू. 1 करोड़ के कृषि निवेशों जैसे बीज, उर्वरकों, रसायनों इत्यादि की बिक्री की गई। इस किसान मेले में उत्तराखण्ड के साथ–साथ देश के कई राज्यों से भी बड़ी संख्या में किसानों ने प्रतिभाग किया। समारोह के अन्त में निदेशक शोध, डा. जे.पी. सिंह ने सभी सम्मानित अतिथियों का धन्यवाद किया।

मेले में प्रगतिशील कृषक सम्मानित

प्रगतिशील कृषक को सम्मानित करते हुए मा. राज्यपाल

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा चयनित प्रगतिशील कृषकों को कृषि के क्षेत्र में अभिनव परिवर्तन लाने एवं उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने के लिए अतिथियों द्वारा प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित किये गये कृषक श्री कुंवर पाल सैनी, ग्राम–प्रेमराजपुर (हरिद्वार); श्री संजय पाण्डे, ग्राम–खड़कीनी (पिथौरागढ़); श्री शेखर चन्द्र मिश्रा, ग्राम–रूईसाण (चमोली); श्री थान सिंह चमियाल, ग्राम–सड़ियाताल (नैनीताल); श्री प्रेम चन्द्र शर्मा, ग्राम–हटाल (देहरादून); श्री प्रभाकर सिंह भाकुनी, ग्राम–हड़ोली (अल्मोड़ा); श्री पूरन चन्द्र कोठारी, ग्राम–रौसाल (चम्पावत); श्रीमती विमला देवी, ग्राम–कोपा कृपाली, गूलरभोज (ऊधमसिंहनगर) एवं श्री कपिल शर्मा, ग्राम–टमरिया वाला, भीरी (रूद्रप्रयाग) हैं।

मेले में प्रतिभाग किये फर्मों के प्रतिनिधि सम्मानित

पुरस्कार प्रदान करते हुए मा. मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड

कृषि उद्योग प्रदर्शनी के पुरस्कार वितरण समारोह में अतिथियों द्वारा सर्वोत्तम स्टॉल का पुरस्कार मै. प्रीत ट्रैक्टर्स प्रा. लि. –नाभा (पंजाब) को तथा सर्वोत्तम प्रदर्शन का पुरस्कार मै. जग्गी एग्रीकल्चर वर्क्स–कबूलपुर (पंजाब) को प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त पावर ट्रिलर, फार्म मशीनरी एवं टूल समूह में मै. जय गुरूदेव इण्डस्ट्रीज–रूद्रपुर, मै. न्यू कम्पीटेन्ट टैक्ट्रर्स–काशीपुर, मै. त्यागी एग्रो सेल्स–किच्छा, मै. बी.टी. एजेन्सी–काशीपुर; फर्टीलाइजर्स समूह में मै. श्रीराम फर्टीलाइजर्स एण्ड कैमिकल्स; माइक्रो न्यूट्रिएंट एवं बॉयो फर्टिलाइजर समूह में मै. हाई मीडिया लैब प्रा. लि.–मुम्बई; पेस्टिसाइडस् एवं बॉयो–पेस्टिसाइडस् समूह में

मै. क्रिस्टल क्रॉप प्रोटैक्शन प्रा. लि.–दिल्ली; एग्रो फोरेस्ट्री, नर्सरी, हर्बल एवं मेडिसिनल प्लान्टस् समूह में मै. सैंचुरी पल्प एण्ड पेपर–लालकुआँ, मै. ग्रीनीश गोल्ड नर्सरी–हल्द्वानी (नैनीताल); वेटेरिनरी, मेडिसिनल एवं एनिमल फीड समूह में मै. वीरबैक एनिमल हैल्थ इण्डिया प्रा. लि.–मुम्बई, मै. प्रोविमी एनिमल न्यूट्रिएंट इण्डिया प्रा. लि.–बैंगलोर, मै. तिवाना ऑयल मिल्स प्रा. लि.–फतेहगढ़ साहिब (पटियाला), मै. रघुशा एग्रोटैक लि.–काशीपुर; बैंकिंग, हाऊसिंग एवं इन्श्योरेंस समूह में एस.बी.आई.–पन्तनगर एवं सीड समूह में मै. अनन्या सीड्स प्रा. लि.–अम्बाला के स्टॉल को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों पर फल वृक्षों के रोपण

विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संचालित विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों यथा कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट, गैंना एंचोली, मटेला, ग्वालदम, ज्योलीकोट, जाखधार एवं शोध केन्द्र मझेड़ा पर उच्च गुणवत्तायुक्त विभिन्न फल वृक्षों की उन्नत प्रजातियों का विगत जुलाई–अगस्त माह में रोपण किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य निकट भविष्य में कृषि विज्ञान केन्द्रों पर मातृ पौधों के प्रखण्ड विकसित कर स्थानीय कृषकों को गुणवत्तायुक्त फल वृक्षों के पौधों की उपलब्धता के साथ ही फल उत्पादन से केन्द्र की आय बढ़ाना है। इसके अतिरिक्त स्थानीय कृषकों हेतु क्षेत्र विशेष की जलवायु के अनुरूप विभिन्न फल वृक्षों की समस्याओं के आवश्यक निदान हेतु विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों पर विश्वविद्यालय के शोध छात्रों एवं सम्बन्धित वैज्ञानिकों द्वारा शोध एवं परीक्षण कार्यों का भी सम्पादन किया जायेगा। देश के विभिन्न शोध संस्थानों से उन्नतशील कृषकों को लाकर रोपण किये जा चुके फल वृक्षों में अनार, आम, लीची, कागजी नीबू, माल्टा, मौसमी आदि फल वृक्षों के उन्नतशील प्रजातियों के 4360 पौधों के रोपण हो चुके हैं। रोपण का कार्य अभी भी जारी हैं तथा दिसम्बर–जनवरी माह में किवी, सेब, नाशपाती, आड़ू, प्लम, खुमानी, अखरोट, बादाम आदि फल वृक्षों के लगभग 2710 और पौधों का रोपण किया जाना है। कृषि विज्ञान केन्द्रों पर फल वृक्षों के रोपण का कार्य संयुक्त निदेशक उद्यान (प्रसार शिक्षा), डा. डी.सी. डिमरी की देखरेख में सम्पन्न किया जा रहा है।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, ठकरानी (देहरादून)

केन्द्र द्वारा टी.एस.पी. परियोजना के अन्तर्गत चकराता एवं कालसी विकास खण्ड के सैंज, हटाल एवं उत्पाल्टा ग्रामों में लहसुन प्रजाति एग्रीफाउण्ड पार्वती के 40 प्रदर्शनों का आयोजन 1.6 है. क्षेत्रफल में सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

उक्त परियोजना के अन्तर्गत मटर की प्रजाति स्वीट पर्ल के 20 प्रदर्शनों का आयोजन उत्पाल्टा ग्राम में 2.0 है. क्षेत्रफल में किया जा रहा है।

केन्द्र द्वारा फूलगोभी हाईब्रिड किस्म कैंडिड चार्म के 10 प्रदर्शनों का आयोजन 1.0 है. क्षेत्रफल में सफलतापूर्वक किया जा रहा है। जबकि ब्रोकली हाईब्रिड किस्म ग्रीन मैजिक के भी 10 प्रदर्शनों का आयोजन 1.0 है. क्षेत्रफल में किया जा रहा है।

धान में पूसा बासमती 1509 प्रजाति के 15 प्रदर्शनों का आयोजन 3.0 है. क्षेत्रफल में किया गया था जिससे 1.0 है. में 50 कुन्तल तक उत्पादन प्राप्त किया गया है। इस प्रजाति की उत्पादकता जनपद में उगायी जाने वाली बासमती एवं अन्य सुगन्धित प्रजातियों की तुलना में 1.5–2.0 गुना अधिक पायी गयी है। यह प्रजाति लगभग 120 दिनों में तैयार हो गयी, जिससे किसानों ने इस फसल के बाद मटर, तोरिया एवं गेहूँ की बुवाई की। संकर धान के अन्तर्गत अराइज–6129 के 10 प्रदर्शनों का आयोजन 2.0 है. क्षेत्रफल में किया गया। इसका उत्पादन 60 कुन्तल प्रति है. पाया गया। मोटे चावल की इस प्रजाति से किसानों को बेहतर आमदनी प्राप्त हुयी।

सरसों की पूसा विजय एवं पन्त सरसों–20 के 15 प्रदर्शनों का आयोजन किया जा रहा है।

दलहन के अन्तर्गत क्लस्टर प्रदर्शनों में पन्त मसूर–8 के 40 प्रदर्शनों का आयोजन 17.8 है. क्षेत्रफल में किया जा रहा है।

गेहूँ के प्रजातीय प्रदर्शनों में एच.डी.–2967 एवं यू.पी.–2628 के 15 प्रदर्शनों का आयोजन 2.0 है. क्षेत्रफल में किया जा रहा है।

कुक्कुट पालन के प्रोत्साहन हेतु 20 कृषक प्रक्षेत्रों पर कैरी देवेन्द्रा प्रजाति के प्रदर्शनों का आयोजन किया जा रहा है।

केन्द्र द्वारा गृह विज्ञान के अन्तर्गत 35 पोषण वाटिका प्रदर्शनों का आयोजन किया गया है जिसके अन्तर्गत मूली, धनिया/करिश्मा, पालक/ऑल ग्रीन, मेथी, राई तथा मटर/स्वीट पर्ल के बीज की बुवाई करायी गयी है।

जनपद के विकास नगर एवं सहसपुर विकास खण्डों के आम उद्यानों में घुण्डी कीट के प्रबन्धन हेतु किसानों को जागरूक कर लगभग 1200 है. क्षेत्रफल में अगस्त, 2015 में कीटनाशकों का छिड़काव कराया गया था।

केन्द्र द्वारा बागवानी, सब्जी विज्ञान, पादप रक्षा, सस्य विज्ञान, मृदा विज्ञान, पशुपालन, कुक्कुट पालन, चारा उत्पादन, गृह विज्ञान के अन्तर्गत कुल 22 प्रशिक्षणों का आयोजन केन्द्र पर एवं केन्द्र के बाहर आयोजित किया गया, जिसमे 516 कृषक लाभान्वित हुये।

वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित करते हुए मा. कुलपति

डा. एस.एस. सिंह, प्रोफेसर एवं कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी को पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय द्वारा नवम्बर 21, 2015 को पन्तनगर में डा. शिव सागर सिंह उत्कृष्ट प्रसार वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

केन्द्र द्वारा दिसम्बर 05, 2015 को विश्व मृदा दिवस के अवसर पर टी.एस.पी. परियोजना के अन्तर्गत चयनित उत्पाल्टा ग्राम में मृदा परीक्षण पर एक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमे 56 कृषकों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर केन्द्र के मृदा विशेषज्ञ द्वारा 11 गांवों के 250 किसानों का मृदा परीक्षण कराकर आवश्यक संस्तुति प्रदान की गयी, जिससे किसानों की मृदा उर्वरता को टिकाउ एवं संतुलित बनाया जा सके।

केन्द्र द्वारा प्याज की एग्रीफाउण्ड लाईट रेड प्रजाति के 80 किग्रा. बीज की पौधशाला तैयार की गयी। इस प्रजाति के पौध का उत्पादन दिसम्बर 31, 2015 तक 27.4 कुन्तल बिक्री कर दी गयी है, जिससे केन्द्र को रूपया 1,64,400.00 की आय प्राप्त हुयी है। 80 किग्रा. बीज की पौध से लगभग 75–80 कुन्तल पौध बिक्री का अनुमान है, जिससे केन्द्र को रूपये 4.5–5.0 लाख की आय होगी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस का आयोजन

दिसम्बर 05, 2015 को केन्द्र के तत्वाधान में विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस–2015 का आयोजन किया गया। इसमें जनपद के विभिन्न ब्लाकों से आये कृषकों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर कृषकों को मृदा के स्वास्थ्य तथा मृदा उर्वरता की जाँच के महत्व के विषय में जानकारी प्रदान की गई। साथ ही कृषकों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड भी वितरित किये गये।

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 14 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया,

जिसमें जनपद के 272 कृषकों एवं कृषक महिलाओं को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।

केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में 335 तथा प्रक्षेत्र परीक्षणों में 55 प्रक्षेत्रों पर सस्य विज्ञान, कीट विज्ञान, सब्जी एवं गृह विज्ञान विषयक परीक्षणों का आयोजन किया गया।

विगत त्रैमास में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा समसामयिक विषयों पर 4 भेंट वार्ता, दूरदर्शन केन्द्र, देहरादून तथा 2 भेंट वार्ता, आकाशवाणी केन्द्र, नजीबाबाद से प्रसारित की गई।

दिसम्बर 23, 2015 को केन्द्र द्वारा 'जय जवान जय विज्ञान दिवस' का आयोजन किया गया। इसमें जनपद के विभिन्न ग्रामों से कृषकों को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर कृषि एवं सम्बन्धित व्यवसायों के विषय में समसामयिक जानकारी प्रदान की गई।

जय जवान जय विज्ञान दिवस का आयोजन

डा. दीप्ती चौधरी, सहायक प्राध्यापक, कीट विज्ञान द्वारा रोडमैप फॉर एग्रीकल्चरल डेवलपमेंट इन अपर गैंगटिक प्लैन रीजन विषय पर दिसम्बर 04, 2015 को आई.आई.एफ.एस.आर., मोदीपुरम में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

केन्द्र द्वारा दलहनी फसलों पर 87 प्रदर्शन 26 है. पर लगाए गए हैं, जिसके अर्न्तगत मसूर एवं चने की खेती पर कृषकों को जागरुक एवं प्रोत्सहित किया जा रहा है। जनपद में मसूर (पी.एल.–8) के 47 प्रदर्शन एवं चने (जी.एन.जी. –663) के 140 प्रदर्शन आयोजित किये गए हैं।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अन्य फसलों के अर्न्तगत 40 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाये गए है जो कि 4.5 है. में फैले हुए है। यह प्रदर्शन विभिन्न विषयों पर आयोजित किए गए है जैसे– सब्जी मटर, पोषण वाटिका, सोयाबीन पर आधारित मूल्यवर्धित खाद्य पदार्थ, श्रम कम करने हेतु रिवाल्विंग स्टूल का प्रयोग एवं मत्स्य पालन। इन प्रदर्शनों का आयोजन काशीपुर, गदरपुर, सितारगंज विकास खण्डों के विभिन्न ग्रामों में किया गया है।

प्रक्षेत्र परीक्षण के अर्न्तगत 02 तकनीकों पर परीक्षण आयोजित किए गए है जो पानी स्वच्छ करने की तकनीक एवं पौष्टिक आटे द्वारा स्वास्थ्य स्तर में बढ़ोत्तरी करने विषय पर आयोजित किये गए है।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 01 रेडियों वार्ता तथा 03 टी.वी. वार्ता में प्रतिभाग किया गया जिसमें फसल प्रबन्धन, किचन गार्डन एवं पौष्टिकता हेतु भोजन बनाने के सिद्धान्त विषयों पर चर्चा की गई।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 14 किसान गोष्ठियों में प्रतिभाग किया गया, जिससे 2837 प्रतिभागी लाभान्वित हुए।

केन्द्र द्वारा "पोषण वाटिका प्रोत्साहन" विषय पर प्रक्षेत्र दिवस ग्राम आनंदखेड़ा–1 में आयोजित किया गया, जिसमें महिलाओं को पोषण वाटिका के महत्व बताए गये एवं घर–घर में लगाने पर जोर दिया।

विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा 06 डायग्नोस्टिक भ्रमण, 243 प्रक्षेत्र भ्रमण केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा जनपद ऊधमसिंहनगर में किए गए। साथ ही 09 लेख/प्रसार सामग्री एवं 04 अखबारों में खबरें प्रकाशित हुई।

केन्द्र के क्रॉप कैफ्टैरिया में मूँगफली के बीजोत्पादन का कार्य किया गया, जिसमें टी.जी.ए.–37 एवं मल्लिका प्रजाति की 1.9 कु. मूँगफली बीज का उत्पादन किया गया।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अक्टूबर 14–17, 2015 तक नीलोखेड़ी, करनाल में प्रशिक्षण कार्यक्रम "माटिवेशनल स्किल्स फॉर प्रोमोशन ऑफ ऑर्गेनिक फार्मिंग" नवम्बर 26–27, 2015 पर पन्तनगर में "मशरुम उत्पादन" विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया गया।

केन्द्र द्वारा कृषक एवं कृषक महिलाओं/युवतिओं हेतु साफ, सफाई एवं स्वच्छता के महत्व, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन, पोषण वाटिका की देखरेख, एकीकृत मत्स्य पालन, बड़ी/पापड़/मसाले बनाना, सब्जियों की परिरक्षण तकनीक इत्यादि पर केन्द्र द्वारा कुल 07 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 156 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए एवं केन्द्र की गृह वैज्ञानिक डा. प्रतिभा सिंह द्वारा प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु "महिलाओं एवं बच्चों की देखभाल" विषय पर नवम्बर 06, 2015 को एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थी

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

केन्द्र द्वारा जनपद अल्मोड़ा के किसानों को कृषि एवं इससे सम्बन्धित तकनीकों से जागरूक करने के उद्देश्य से कुल 16 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 276 कृषकों तथा कृषक महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया, जिसमें फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, कृषि वानिकी, तथा कृषि प्रसार इत्यादि विषयों पर कृषकों को व्यावहारिक तकनीकी जानकारी उपलब्ध करायी गयी।

केन्द्र द्वारा रबी 2015–16 में 13.84 है. पर 147 कृषकों के प्रक्षेत्र पर उन्नत तकनीकियों के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाये गये हैं।

केन्द्र द्वारा 04 कृषि प्रदर्शनी में केन्द्र द्वारा की जा रही गतिविधियों को प्रदर्शित करने हेतु जनपद में स्टाल लगाकर प्रदर्शित किया गया, जिसमें 1004 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। स्टाल में प्याज (प्रजाति एग्री फाउन्ड लाईट रैड) की पौध की बिक्री की गयी। इसके अतिरिक्त केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 55 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किये गये, जिसमें 918 कृषकों को विभिन्न कृषि तकनीकों तथा उनकी कृषि संबंधी समस्याओं का निराकरण किया गया। केन्द्र द्वारा आयोजित किये जा रहे विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों पर आधारित कृषि तकनीकों के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु 03 समाचारों को विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया।

विगत त्रैमास में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर रेखीय विभाग द्वारा आयोजित कृषि गोष्ठी एवं कृषि महोत्सव रबी 2015 में प्रतिभाग किया गया जिसमें 7078 कृषक पुरूष/महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया। वैज्ञानिक द्वारा विभिन्न कृषि तकनीकों की जानकारी तथा उनकी कृषि संबंधी समस्याओं का निराकरण किया गया।

केन्द्र द्वारा दिसम्बर 05, 2015 को विश्व मृदा दिवस के अवसर पर 250 मृदा स्वास्थ्य कार्ड कृषकों को वितरित किये गये। इस अवसर पर जिला पंचायत

अध्यक्षा श्रीमती पार्वती मेहरा द्वारा प्रतिभाग एवं प्रक्षेत्र भ्रमण किया गया। इसके अतिरिक्त दिसम्बर 23, 2015 को केन्द्र पर जय किसान जय विज्ञान दिवस के अवसर पर एक कृषि गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें 32 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

ग्राम पैडूला में मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित करते हुए

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

केन्द्र पर शीत ऋतु में बादाम के 50, खुमानी के 30, आड़ू के 25, नैक्ट्रीन के 10 एवं अखरोट के 40 पौधों का रोपण किया गया।

केन्द्र द्वारा दिसम्बर 05, 2015 को विनायक ग्राम में "विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस" मनाया गया। इस अवसर पर केन्द्र द्वारा 180 मृदा स्वास्थ्य कार्ड किसानों को वितरित किए गए।

"जय जवान जय किसान" सप्ताह में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा दिसम्बर 23, 2015 को किरी गांव में 'कृषक वैज्ञानिक संवाद' गोष्ठी का आयोजन किया गया एवं प्याज की पौध वितरित की गयी।

विगत त्रैमास में केन्द्र पर 09 तथा केन्द्र से बाहर 12 प्रशिक्षण सम्पन्न किए गए, जिसमें क्रमशः 178 एवं 251 कृषक लाभान्वित हुए। वाह्य विभाग द्वारा वित पोषित 01 प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें 20 प्रशिक्षार्थियों ने प्रतिभाग किया। केन्द्र द्वारा 01 प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया, जिससे 23 कृषक लाभान्वित हुए।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 48 गोष्ठियों में प्रतिभाग किया गया, जिससे 6808 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत् त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 68 भ्रमण किए गये, जिसके द्वारा 515 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु 760 किसानों द्वारा भ्रमण किया गया और केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषि संबंधी समस्याओं का समाधान एवं कृषि उत्पादन की नवीनतम जानकारी प्राप्त की। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 02 टी.वी. कार्यक्रम दिये गये और प्रचार–प्रसार हेतु दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण में 02 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में सरसों–0.5 है., मसूर, 3.0 है., मसूर (टी.एस.पी. के अंतर्गत)–1.0 है., गेहूँ–4.0 है., गेहूँ (टी.एस.पी. के अंतर्गत)–4.0 है., सब्जी मटर, 0.5 है., सब्जी मटर (टी.एस.पी. के अंतर्गत)–0.5 है., प्याज (टी.एस.पी. के अंतर्गत)–1.0 है., बरसीम–0.50 है. एवं जई–0.50 है. में लगाया गया।

पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. मंगला राय द्वारा नवम्बर 23, 2015 को केन्द्र का भ्रमण किया गया एवं केन्द्र द्वारा की जा रही गतिविधियों की जानकारी ली।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

विगत त्रैमास के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे– पर्वतीय क्षेत्रों में गृह वाटिका के प्रति महिलाओं में जागरूकता लाना, लहसुन व अदरक का मूल्य सम्वर्धन, घरेलु सामग्री में मिलावट की जांच करना, बांधनी कला द्वारा वस्त्रों की रंगाई, मोमबत्ती बनाना, मृदा परीक्षण किट द्वारा मृदा जांच की विधि, आलू के रोग/कीट का जैविक नियंत्रण,

केन्द्र का निरीक्षण करते हुए मा. कुलपति, डा. मंगला राय

पशुओं के नवजात बच्चों की देखभाल, गेंहूँ में एकीकृत नाशीजीव प्रबन्धन, आदि विषयों पर केन्द्र व केन्द्र से बाहर कुल 11 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षणों का आयोजन केन्द्र के साथ–साथ जनपद के ऑवला कोट, गेठिया पड़ाव, रौशिल, फूलचौड़, कुंवरपुर, आदि ग्रामों में किया गया।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में मृदा विज्ञान, पशुपालन, गृहविज्ञान, पादप सुरक्षा तथा उद्यान विज्ञान एवं अन्य विषयों जैसे बैकयार्ड कुक्कुट पालन, मोमबत्ती बनाना, लाही–तोरिया–पीली सरसों में एकीकृत पोषक तत्व प्रबन्धन, गेंहूँ में एकीकृत पोषक तत्व प्रबन्धन, मसूर व चना में नत्रजन पोषण प्रबन्धन, सब्जी मटर अर्किल में जैविक नियंत्रण (उकठा रोग) आदि विषयों में कुल 45 प्रदर्शन कार्यक्रमों का कुशल संचालन किया गया। प्रदर्शनों का आयोजन लगभग 1.0 है. क्षेत्रफल में दोगड़ा, चोपड़ा, गेठिया, स्यालीखेत, भटलानी, टिकुरी, धनपुर, सरना, सिलौटी, गंगापुर आदि स्थानों पर सफलतापूर्वक किया गया। सांथ ही वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न विषयों जैसेः पोषक वाटिका, शारीरिक श्रम कम करने हेतु पानी ढ़ोने की इकाई, टमाटर के पर्ण कुंचन रोग का समन्वित प्रबन्धन विषय पर प्रक्षेत्र परीक्षण करवाए गये।

विगत त्रैमास में कृषि विभाग, नैनीताल द्वारा अक्टूबर 26–31, 2015 तक 11 कृषक गोष्ठियों का आयोजन क्रमशः दोगड़ा, गिन्ती गांव, स्यात, बैलपड़ाव, अमृत आश्रम बमौरी, फतेहपुर, फूलचौड़, मोटाहल्दु, लाखनमण्डी, कुंवरपुर, एफ.टी.आई. हल्द्वानी में किया गया। इन गोष्ठियों में केन्द्र के वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग करके 2468 कृषकों को विभिन्न कृषि सम्बन्धी जैसेः मृदा जीर्णोद्धार, पशुपालन एवं आहार प्रबन्धन, चारा प्रबन्धन, स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को रोजगार परक जानकारी जैसेः मोमबत्ती निर्माण, बांधनी कला द्वारा वस्त्रों की रंगाई, मुलायम खिलौने बनाना, पर्वतीय क्षेत्रों में पाये जाने वाले स्थानीय फल–फूल एवं सब्जियों का मूल्य संवर्धन, फसलों में कीट एवं रोग से सम्बन्धित जानकारी दी गई।

केन्द्र द्वारा दिसम्बर 04, 2015 को अनुसंधान केन्द्र मझेड़ा में "पर्वतीय कृषि के उन्नयन एवं विकास हेतु कृषक जागरूकता गोष्ठी एवं प्रदर्शनी" विषय पर एक दिवसीय किसान मेला एवं कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 900 महिलाओं एवं पुरूषों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय

बिहार के मत्स्य पालकों हेतु 'मत्स्य पालन बीज उत्पादन एवं प्रसंस्करण' विषयक 10 दिवसीय 02 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत जनपद–पटना से नवम्बर 26 से दिसम्बर 05, 2015 तक 27 मत्स्य पालकों द्वारा तथा जनपद–बेतियां से दिसम्बर 10–19, 2015 तक 30 मत्स्य पालकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय द्वारा उक्त अवधि में लगभग 45000 मत्स्य बीज, जिसमें रोहू के 1200, ग्रास कार्प के 1500, आमूर कार्प के 1000, नैन के 500, गोल्डन कार्प के 32 तथा मिश्रित मत्स्य के 40800 अंगुलिकाओं की आपूर्ति की गई।

गृह विज्ञान महाविद्यालय

गृह विज्ञान प्रसार विभाग द्वारा अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना के अन्तर्गत देहरादून जनपद के विभिन्न विकास खण्डों चकराता, विकासनगर, डोइवाला, कालसी, सहसपुर के 43 गांवों से 75 स्वयं सहायता समूहों का उनकी कार्यशीलता एवं धनोपार्जन गतिविधियाँ, अर्जित आय एवं स्वयं सहायता समूह द्वारा महिलाओं का सशक्तिकरण जानने हेतु सर्वे किया गया।

कृषक महोत्सव रबी-2015 में विश्वविद्यालय का सक्रिय योगदान

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा विगत् वर्षों की भाँति राज्य में कृषक महोत्सव रबी–2015 का आयोजन अक्टूबर 25 से नवम्बर 03, 2015 तक पूरे राज्य में न्याय पंचायत स्तर पर किया गया। आधुनिक कृषि तकनीकों एवं आवश्यक कृषि निवेश को कृषक प्रक्षेत्र तक ले जाने का कृषक महोत्सव एक सर्वोत्तम माध्यम है, जिसमें विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्यरत 09 कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों सहित विश्वविद्यालय मुख्यालय के प्रसार शिक्षा वैज्ञानिकों, कृषि महाविद्यालय, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान महाविद्यालय तथा प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा राज्य के जनपदों में अलग–अलग रूटों पर संचालित कृषक रथों पर प्रतिभाग कर न्याय पंचायत स्तर पर आयोजित कृषक गोष्ठियों में कृषकों से सीधा संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं का समाधान किया गया। कृषक महोत्सव में वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों को कृषि, जल संग्रहण, तालाब निर्माण, मृदाक्षरण नियन्त्रण, पशुओं के पालन–पोषण एवं प्रबंधन, फसल उत्पादन की नवीन तकनीकों, फसलों के रोग एवं कीट प्रबन्धन इत्यादि से सम्बधित जानकारी दी गई।

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषकों, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.) के सदस्यों, विकास खण्ड स्तरीय तकनीकी दल (बी.टी.टी.) के सदस्यों, गन्ना पर्यवेक्षक/निरीक्षक, मत्स्य निरीक्षक एवं ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक (बी.टी.एम.) हेतु गन्ना उत्पादन की उन्नत तकनीकी एवं अन्तःशस्यन तथा जल संग्रह तकनीक एवं जल प्रबन्धन विषयक 02 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कुल 34 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 05 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण ऑपरेशन, मेन्टिनेन्स एवं मैनेजमेन्ट ऑफ एग्रीकल्चर, सब्जियों की खेती, मशरूम उत्पादन एवं बीज उत्पादन एवं पॉली हाउस के लाभ आदि से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 127 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण दो दिवसीय से लेकर सात दिवसीय थे। प्रशिक्षणों के अन्त में प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाण–पत्र वितरित किये गये। उपरोक्त प्रशिक्षणों के दौरान भ्रमण कार्यक्रम में किसानों को विश्वविद्यालय स्थित सभी अनुसंधान केन्द्रों पर भ्रमण कराकर नवीनतम जानकारी प्रदान की गयी।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से कुल 434 प्रश्न किसानों द्वारा पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 567 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं साहित्य सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की। इसके अतिरिक्त किसानों द्वारा एटिक से कुल रू. 35,873 के साहित्य एवं रू. 2,06,281 के धान्य फसलों एवं सब्जियों के बीजों का क्रय किया गया।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

कृषि हेतु

गेंहू में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों की रोकथाम के लिए 2–4 डी सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत 625 ग्राम या 2–4 डी इमाइन साल्ट 72 प्रतिशत 600 मिली. दवा को 600–800 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति है. की दर से बुवाई के 35–40 दिन के अन्दर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

मसूर, मटर व चना में रतुआ रोग के नियंत्रण के लिए जिंक, मैगनीज, कार्बामेट की 2.5 किग्रा. मात्रा को 700–800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। चने में फलीबेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफॉस 25 ई.सी. की 1.25 लीटर या साइपरेमेथ्रिन 500–600 मिली. को 600–800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें।

गेंहू में पीला रतुआ रोग का प्रकोप होने पर प्रोपीकोनाजोल 500 मिली. या हैक्साकोनेजोल 1 लीटर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। पर्वतीय क्षेत्र में गेंहू में पर्याप्त नमी होने पर असिंचित दशा में 0.5 किग्रा. व सिंचित दशा में 2–2.5 किग्रा. यूरिया प्रति नाली की दर से डालें।

मटर और मसूर में सफेद विगलन रोग दिखने पर कार्बेन्डाजिम के 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

सरसों एवं तोरिया में माहू कीट का प्रकोप होने पर 1 लीटर डाइमेथोएट 30 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. का 1.4 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

पर्वतीय क्षेत्रों में जनवरी माह में घाटियों में आलू, लोबिया, राजमा, भिण्डी एवं खीरावर्गीय फसलों की बुवाई करें।

पाला की सम्भावना होने पर पपीते के बाग में सिंचाई करें तथा धूंआ करें।

फरवरी के दूसरे पखवाड़ें में सूरजमुखी की बुवाई करें।

फरवरी माह में मैदानी क्षेत्रों में बैंगन की 60x45 सें.मी. की दूरी पर रोपाई करें।

पालक, मैंथी, धनिया में कीटों से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत रोगोर कीटनाशी का एक छिड़काव करें।

पर्वतीय क्षेत्रों में फरवरी माह में आलू की अगेती बुवाई 45–60 से.मी. की दूरी पर बनी पंक्तियों में 15–20 से.मी. की दूरी पर 5–7 से.मी. गहराई पर करें।

फरवरी माह में पर्वतीय क्षेत्रों में टमाटर, शिमला मिर्च की नर्सरी डालें एवं खीरावर्गीय फसलों की बुवाई करें।

मार्च माह में उर्द एवं मूंग की क्रमशः 30–35 किग्रा. एवं 25–30 किग्रा. बीज की प्रति है. दर से बुवाई करें।

पर्वतीय क्षेत्र में मार्च माह में चना, मटर के पत्ती सुरंगक व फली छेदक कीट तथा मसूर के माहू कीट के नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफास 15 मिली. दवा को 16–20 लीटर पानी में घोलकर प्रति नाली की दर से छिड़काव करें।

पशुपालन हेतु

मुर्गी घरों के बिछावन को दिन में 2–3 बार पलटें। मुर्गी घरों में दिन और रात को कुल 16 घंटे प्रकाश बनाए रखें।

फरवरी माह में चूजे पालने की व्यवस्था करें।

व्यस्क पशुओं को फरवरी माह में अंतःकृमि नाशक दवा पिलाएं। छः माह की उम्र के बच्चों को मुंहपका, खुरपका रोगों से बचाव हेतु टीका लगवाएं।

पशुओं को अफरा से बचाव हेतु फूली हुई बरसीम न खिलाएं। अफरा होने पर उपचार हेतु 500 मिली. सरसों का तेल, 100 ग्राम काला नमक, 50 ग्राम मीठा सोडा, 15 ग्राम अजवाईन तथा 10 ग्राम हींग का मिश्रण खिलाएं।

निदेशक प्रसार शिक्षा का विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

नवम्बर 22, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट, नवम्बर 23, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, पिथौरागढ़, नवम्बर 24, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम, नवम्बर 25, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला तथा नवम्बर 26, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट का भ्रमण कर क्रियान्वित कार्यक्रमों का अनुश्रवण एवं निरीक्षण किया गया। उक्त भ्रमण में संयुक्त निदेशक प्रसार (उद्यान), डा. डी.सी. डिमरी भी साथ थे।

दिसम्बर 13, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार) एवं दिसम्बर 14, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून) का भ्रमण कर संचालित गतिविधियों का निरीक्षण किया गया।

निदेशक की कलम से

विश्वविद्यालय के अन्तर्गत राज्य के 09 जनपदों में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रदेश के सुदूर पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि की उन्नत तकनीकों का प्रसार किया जा रहा है। राज्य के कृषकों को उन्नत तकनीकों से अवगत कराकर उनको इन तकनीकों से अधिक लाभ प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं प्रक्षेत्र परीक्षणों इत्यादि का आयोजन किया जाता है। कृषक भी इन उन्नत तकनीकों को अपनाने एवं हस्तानान्तरण में अपनी रूचि एवं सहयोग प्रदान करते हैं। साथ ही प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई, कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र एवं प्रसार शिक्षा निदेशालय स्थित राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (समेटी), उत्तराखण्ड भी कृषि तकनीकी हस्तानान्तरण एवं कृषि व सम्बन्धित क्षेत्र में मानव संसाधन विकास हेतु प्रसार कर्मियों/कृषकों, कृषक महिलाओं/ग्रामीण युवक–युवतियों में क्षमता विकास हेतु सतत् प्रयासरत् हैं।

कृषकों से प्राप्त अनुभवों के आधार पर कृषि विज्ञान केन्द्र, क्षेत्र के कृषकों के लिए एक सूचना स्रोत के रूप में कार्य कर रहे हैं, जिनसे प्राप्त सूचनाओं एवं तकनीकों को अपनाकर कृषक अपनी आय में वृद्धि कर आर्थिक संतुष्टि प्राप्त करते हैं। इसी सन्दर्भ में वर्ष 2015 में प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 768 प्रशिक्षण आयोजित किए गए, जिससे 17,299 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए, जिसमें प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा 74 एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 675 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे क्रमशः 2,213 एवं 14,710 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। इसके अतिरिक्त राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों, जिला एवं विकास खण्ड स्तरीय प्रसार कार्यकर्ताओं/अधिकारियों, एफ.ए.सी. सदस्यों एवं प्रगतिशील कृषकों हेतु 19 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसमें कुल 376 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा तिलहन, दलहन एवं अन्य फसलों में क्रमशः 1093, 1229 एवं 5281 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया, जिनके अन्तर्गत कुल 729.93 है. क्षेत्र आच्छादित किया गया तथा 119 प्रक्षेत्र परीक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे 874 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा उक्त अवधि में 6,087 प्रक्षेत्र भ्रमण किये गये, जिनके माध्यम से 18,132 कृषकों की समस्याओं का समाधान करने के साथ–साथ उन्हें उन्नत कृषि की तकनीकी उपलब्ध कराई गई। केन्द्रों द्वारा 06 किसान मेलों, 15 कृषि प्रदर्शनियों एवं 510 किसान गोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिनमें क्रमशः 1114, 1,19,561 एवं 45,184 कृषक लाभान्वित हुए। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा उक्त अवधि में 64 प्रक्षेत्र दिवसों, 106 नैदानिकी भ्रमण, 762 परामर्श भ्रमण आयोजित किये गये, जिनसे क्रमशः 1355, 1236 एवं 4554 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 17 पशु शिविरों का आयोजन किया गया, जिसमें 3247 पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। उक्त अवधि में 1123 कृषकों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्रों पर भ्रमण कर तथा 1384 कृषकों द्वारा हेल्प लाइन (दूरभाष) के माध्यम से केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकी जानकारी अर्जित की गई।

वैज्ञानिकों द्वारा कृषकोंपयोगी 39 रेडियो वार्ताओं तथा 98 टी.वी. कार्यक्रमों के प्रसारण हेतु रिकार्डिंग दी गई। इसके साथ ही 98 उपयोगी कृषि लेखों का भी प्रकाशन किया गया। केन्द्र द्वारा संचालित किये जा रहे गतिविधियों का विभिन्न समाचार पत्रों में 206 समाचार प्रकाशित हुए। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 718.93 कु. खाद्यान्न फसलों के उन्नत बीजों के साथ–साथ 32,33,346 सब्जी पौधों तथा 6,580 उत्कृष्ठ प्रजाति के फलों के पौधों का भी उत्पादन किया।

कृषकों को समस्त सूचनाएं एक स्थल पर प्रदान करने के उद्देश्य से एकल खिड़की पद्धति के माध्यम से कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र द्वारा टेलीफोन एवं हेल्पलाइन के माध्यम से उक्त अवधि में कृषकों की 1956 समस्याओं का समाधान किया गया तथा 3645 कृषकों ने केन्द्र पर भ्रमण किया। साथ ही एटिक द्वारा रू0 4,96,573 के प्रसार पुस्तिकाओं तथा रू0 59,335 के बीजों की बिक्री की गई।

कृषि विज्ञान केन्द्रों को अपनी कार्ययोजना में क्षेत्र आधारित तकनीकों, सरकारी व गैर सरकारी क्षेत्रों की सहभागिता बढ़ाने, गुणवत्तायुक्त बीज, रोपण सामग्री, परागण हेतु मधुमक्खी, जैविक खाद, जैविक कीटनाशी, पोषक तत्व, नाशीजीव प्रबन्धन, कटाई पूर्व एवं उपरान्त प्रबन्धन पर ध्यान देना होगा। केन्द्रों को कृषि ऋण एवं फसल बीमा सम्बन्धी जानकारी भी कृषकों को प्रदान करनी होगी, जिससे कृषक उपलब्ध वित्तीय सुविधाओं का लाभ उठा सकें।

कृषि विज्ञान केन्द्रों का कृषि विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। सभी प्रसार वैज्ञानिकों से यह अपेक्षा है कि वे प्रदेश के कृषि विकास एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में अपना अमूल्य योगदान देंगे एवं उत्तराखण्ड को समृद्ध एवं खाद्यान्न निर्भर बनायेंगे।

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :– डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

98वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी की झलकियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : विश्वविद्यालय मुद्रणालय, पन्तनगर